॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक सन्तकी अमूल्य शिक्षा

ब्रह्मलीन परमश्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराजकी कृपासे प्राप्त

लेखक
राजेन्द्र कुमार धवन

श्रीकृष्ण प्रकाशन
बुलियन बिल्डिंग, हल्दियोंका रास्ता, जयपुर- ३०२००३
फोन : ०१४१-२५७०६०२, २५६३३७६

॥ श्रीहरिः ॥

सं. २०६६ तृतीय संस्करण : ४०,०००
कुल मुद्रण : ८०,०००

SKP # 0117

मूल्य : चार रुपये

यह विधि-निषेध उनके लिये आवश्यक है, जो अपना कल्याण चाहते हैं। विदेशी लोगोंमें ऐसा विधि-निषेध नहीं देखा जाता; क्योंकि वे अपने कल्याणके उद्देश्यसे कार्य करते ही नहीं। विदेशी लोग इन बातोंको 'मानते' नहीं – यह बात नहीं है, वे तो इन बातोंको 'जानते' ही नहीं। ये बातें ऋषियों-मुनियोंकी खोज हैं, जिनका प्रभाव अवश्य होता है।

– परमश्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक सन्तकी अमूल्य शिक्षा

१. एक ही सिद्धान्त, एक ही इष्ट, एक ही मन्त्र, एक ही माला, एक ही समय, एक ही आसन, एक ही स्थान हो तो जल्दी सिद्धि होती है।

२. विष्णु, शंकर, गणेश, सूर्य और देवी – ये पाँचों एक ही हैं। विष्णुकी बुद्धि 'गणेश' है, अहम् 'शंकर' है, नेत्र 'सूर्य' है और शक्ति 'देवी' है। राम और कृष्ण विष्णुके अन्तर्गत ही हैं।

३. कलियुगमें कोई अपना उद्धार करना चाहे तो राम तथा कृष्णकी प्रधानता है, और सिद्धियाँ प्राप्त करना चाहे तो शक्ति तथा गणेशकी प्रधानता है– **'कलौ चण्डीविनायकौ'**।

४. औषधसे लाभ न हो तो भगवान्‌को पुकारना चाहिये। एकान्तमें बैठकर कातर भावसे, रोकर

भगवान्‌से प्रार्थना करें तो जो काम औषधसे नहीं होता, वह प्रार्थनासे हो जाता है। मन्त्रोंमें, अनुष्ठानोंमें उतनी शक्ति नहीं है, जितनी शक्ति प्रार्थनामें है। प्रार्थना जपसे भी तेज है।

५. भक्तोंके नामसे भगवान् राजी होते है। शंकरके मन्दिरमें घण्टाकर्ण आदिका, रामके मन्दिरमें हनुमान्, शबरी आदिका नाम लो। शंकरके मन्दिरमें रामायणका पाठ करो। रामके मन्दिरमें शिवताण्डव, शिवमहिम्नः आदिका पाठ करो। वे राजी हो जायँगे। हनुमान्‌जीको प्रसन्न करना हो उन्हें रामायण सुनाओ। रामायण सुननेसे वे बड़े राजी होते हैं।

६. अपने कल्याणकी इच्छा हो तो 'पंचमुखी या वीर हनुमान्'की उपासना न करके 'दास हनुमान्'की उपासना करनी चाहिये।

७. शिवजीका मन्त्र रुद्राक्षकी मालासे जपना

चाहिये, तुलसीकी मालासे नहीं।

८. हनुमान्‌जी और गणेशजीको तुलसी नहीं चढ़ानी चाहिये।

९. गणेशजी बालकरूपमें हैं। उन्हें लड्डू और लाल वस्त्र अच्छे लगते हैं।

१०. दशमी-विद्धा एकादशी त्याज्य होती है, पर गणेशचतुर्थी तृतीया-विद्धा श्रेष्ठ होती है।

११. किसी कार्यको करें या न करें - इस विषयमें निर्णय करना हो तो एक दिन अपने इष्टका खूब भजन-ध्यान, नामजप, कीर्तन करें। फिर कागजकी दो पुड़िया बनायें। एकमें लिखें 'काम करें' और दूसरीमें लिखें 'काम न करें। फिर किसी बच्चेसे कोई एक पुड़िया उठवायें और उसे खोलकर पढ़ लें।

१२. किंकर्तव्यविमूढ़ होनेकी दशामें चुप, शान्त हो जायँ और भगवान्‌को याद करें तो समाधान मिल जायगा।

१३. कोई काम करना हो तो मनसे भगवान्‌को देखो। भगवान् प्रसन्न दीखें तो वह काम करो और प्रसन्न न दीखें तो वह काम मत करो कि भगवान्‌की आज्ञा नहीं है। एक-दो दिन करोगे तो भान होने लगेगा।

१४. विदेशी लोग दवापर जोर देते हैं, पर हम पथ्यपर जोर देते हैं-

पथ्ये सति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः॥

(वैद्यजीवनम् १/१०)

'पथ्यसे रहनेपर रोगी व्यक्तिको औषध-सेवनसे क्या प्रयोजन ? और पथ्यसे न रहनेपर रोगी व्यक्तिको औषध-सेवनसे या प्रयोजन ?'

१५. जहाँतक हो सके, किसी भी रोगमें ऑपरेशन नहीं कराना चाहिये। दवाओंसे चिकित्सा करनी चाहिये। ऑपरेशनद्वारा प्रसव कभी न करायें। जो स्त्री चक्की चलाती है, उसे प्रसवके समय पीड़ा नहीं होती और स्वास्थ्य भी सदा ठीक रहता है।

१६. एक ही दवा लम्बे समयतक नहीं लेनी चाहिये। बीचमें कुछ दिन उसे छोड देना चाहिये। निरन्तर लेनेसे वह दवा आहार (भोजन)की तरह हो जाती है।

१७. वास्तवमें प्रारब्धसे रोग बहुत कम होते हैं, ज्यादा रोग कुपथ्यसे अथवा असंयमसे होते हैं। कुपथ्य छोड दें तो रोग बहुत कम हो जायँगे। ऐसे ही प्रारब्धसे दुःख बहुत कम होता है, ज्यादा दुःख मूर्खतासे, राग-द्वेषसे, खराब स्वभावसे होता है।

१८. चिन्तासे कई रोग होते हैं। कोई रोग हो तो वह चिन्तासे बढता है। चिन्ता न करनेसे रोग जल्दी ठीक होता है। हरदम प्रसन्न रहनेसे प्रायः रोग नहीं होता, यदि होता भी है तो उसका असर कम पडता है।

१९. मन्दिरके भीतर स्थित प्राण-प्रतिष्ठित मूर्तिके दर्शनका जो माहात्म्य है, वही माहात्म्य मन्दिरके

शिखरके दर्शनका है।

२०. शिवलिंगपर चढ़ा पदार्थ ही निर्माल्य अर्थात् त्याज्य है। जो पदार्थ शिवलिंगपर नहीं चढ़ा, वह निर्माल्य नहीं है। द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें शिवलिंगपर चढ़ा पदार्थ भी निर्माल्य नहीं है।

२१. जिस मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा हुई हो, उसीमें सूतक लगता है। अतः उसकी पूजा ब्राह्मण अथवा बहन-बेटीसे करानी चाहिये। परन्तु जिस मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा नहीं की गयी हो, उसमें सूतक नहीं लगता। कारण कि प्राणप्रतिष्ठाके बिना ठाकुरजी घरके सदस्यकी तरह ही हैं; अतः उनका पूजन सूतकमें भी किया जा सकता है।

२२. घरमें जो मूर्ति हो, उसका चित्र लेकर अपने पास रखें। कभी बाहर जाना पड़े तो उस चित्रकी पूजा करें। किसी कारणवश मूर्ति खण्डित हो जाय तो उस अवस्थामें भी उस चित्रकी ही पूजा करें।

२३. घरमें रखी ठाकुरजीकी मूर्तिमें प्राण-प्रतिष्ठा नहीं करानी चाहिये।

२४. किसी स्तोत्रका माहात्म्य प्रत्येक बार पढ़नेकी जरूरत नहीं। आरम्भ और अन्तमें एक बार पढ़ लेना चाहिये।

२५. जहाँ तक शंख और घण्टेकी आवाज जाती है, वहाँतक नीरोगता, शान्ति, धार्मिक भाव फैलते हैं।

२६. कभी मनमें अशान्ति, हलचल हो तो पन्द्रह-बीस मिनट बैठकर राम-नामका जप करो अथवा **'आगमापायिनोऽनित्याः'** (गीता २/१४) — इसका जप करो, हलचल मिट जायगी।

२७. कोई आफत आ जाय तो दस-पन्द्रह मिनट बैठकर नामजप करो और प्रार्थना करो तो रक्षा हो जायगी। सच्चे हृदयसे की गयी प्रार्थनासे तत्काल लाभ होता है।

२८. घरमें बच्चोंसे प्रतिदिन घण्टा-डेढ़ घण्टा

भगवन्नामका कीर्तन करवाओ तो उनकी जरूर सद्बुद्धि होगी और दुर्बुद्धि दूर होगी।

२९. **'गोविन्द गोपालकी जय'** -इस मन्त्रका उच्चारण करनेसे संकल्प-विकल्प मिट जाते हैं।, आफत मिट जाती है।

३०. नामजपसे बहुत रक्षा होती है। गोरखपुरमें प्रति बारह वर्ष प्लेग आया करता था। भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारने एक वर्षतक नामजप कराया तो फिर प्लेग नहीं आया।

३१. कोई रात-दिन राम-राम करना शुरू कर दे तो उसके पास अन्न, जल, वस्त्र आदिकी कमी नहीं रहेगी।

३२. प्रह्लादकी तरह एक नामजपमें लग जाय तो कोई जादू-टोना, व्यभिचार, मूठ आदि काम नहीं करता।

३३. वास्तवमें वशीकरण मन्त्र उसीपर चलता है,

जिसके भीतर कामना है। जितनी कामना होगी, उतना असर होगा। अगर कोई कामना न हो तो मन्त्र नहीं चल सकता; जैसे पत्थरपर जोंक नहीं लग सकती।

३४. रामरक्षास्तोत्र, हनुमान्चालीसा, सुन्दरकाण्डका पाठ करनेसे अनिष्ट मन्त्रोंका (मारण-मोहन आदि तांत्रिक प्रयोगोंका) असर नहीं होता। परन्तु इसमें बलाबल काम करेगा।

३५. भगवन्नामका जप-कीर्तन करनेसे अथवा कर्कोटक, दमयन्ती, नल और ऋतुपर्णका नाम लेनेसे कलियुग असर नहीं करता—

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च ।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ।।

(महाभारत, वन. ७९/१०)

३६. कलियुगसे बचनेके लिये हरेक भाई-बहनको नल-दमयन्तीकी कथा पढ़नी चाहिये। नल-दमयन्तीकी कथा पढ़नेसे कलियुगका असर नहीं

होगा, बुद्धि शुद्ध होगी।

३७. छोटे गरीब बच्चोंको मिठाई, खिलौना आदि देकर राजी करनेसे बहुत लाभ होता है और शोक-चिन्ता मिटते हैं, दुःख दूर होता है। इसमें इतनी शक्ति है कि आपका भाग्य बदल सकता है। जिनका हृदय कठोर हो, वे यदि छोटे-छोटे गरीब बच्चोंको मिठाई खिलायें और उन्हें खाते हुए देखें तो उनका हृदय इतना नरम हो जायगा कि एक दिन वे रो पडेंगे!

३८. छोटे ब्राह्मण-बालकोंको मिठाई, खिलौना आदि मनपसन्द वस्तुएँ देनेसे पितृदोष मिट जाता है।

३९. कन्याओंको भोजन करानेसे शक्ति बहुत प्रसन्न होती है।

४०. रात्रि सोनेसे पहले अपनी छायाको तीन बार कह दे कि मुझे प्रातः इतने बजे उठा देना तो ठीक उतने बजे नींद खुल जायगी। पर उस समय जरूर

उठ जाना चाहिये।

४१. जो साधक रात्रि साढे ग्यारहसे साढे बारह बजेतक अथवा ग्यारहसे एक बजेतक जगकर भजन-स्मरण, नाम-जप करता है, उसको अन्त समयमें मूर्च्छा नहीं आती और भगवान्‌की स्मृति बनी रहती है।

४२. सूर्योदय और सूर्यास्तके समय सोना नहीं चाहिये। सूर्योदयके बाद उठनेसे बुद्धि कमजोर होती है, और सूर्योदयसे पहले उठनेसे बुद्धिका विकास होता है। अतः सूर्योदय होनेसे पहले ही उठ जाओ और सूर्यको नमस्कार करो। फिर पीछे भले ही सो जाओ।

४३. प्रतिदिन स्नान करते समय 'गंगे-गंगे' उच्चारण करनेकी आदत बना लेनी चाहिये। गंगाके इन नामोंका भी स्नान करते समय उच्चारण करना चाहिये— **'ब्रह्मकमण्डली, विष्णुपादोदकी,**

जटाशंकरी, भागीरथी, जाह्नवी'। इससे ब्रह्मा,विष्णु तथा महेश —तीनोंका स्मरण हो जाता है।

४४. प्रतिदिन प्रातः स्नानके बाद गंगाजलका आचमन लेना चाहिये। गंगाजल लेनेवाला नरकोंमें नहीं जा सकता। गंगाजलको आगपर गरम नहीं करना चाहिये। यदि गरम करना ही हो तो धूपमें रखकर गरम कर सकते हैं। सूतकमें भी गंगा-स्नान कर सकते हैं।

४५. सूर्यको जल देनेसे त्रिलोकीको जल देनेका माहात्म्य होता है। प्रातः स्नानके बाद एक ताँबेके लोटेमें जल लेकर उसमें लाल पुष्प या कुंकुम डाल दे और **'श्रीसूर्याय नमः'** अथवा **'एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।'** कहते हुए तीन बार सूर्यको जल दे।

४६. प्रत्येक बार लघुशंका करनेके बाद इन्द्रिय और

मुखको ठण्डे जलसे तथा पैरोंको गरम जलसे धोना चाहिये। इससे आयु बढ़ती है।

४७. प्रत्येक कार्यमें यह सावधानी रखनी चाहिये कि समय और वस्तु कम-से-कम खर्च हों।

४८. रोज प्रातः बड़ोंको नमस्कार करना चाहिये। जो प्रातः बड़ोंको नमस्कार करते हैं, वे नमस्कार करनेयोग्य हैं!

४९. कोई हमारा चरण-स्पर्श करे तो आशीर्वाद न देकर भगवन्नामका उच्चारण करना चाहिये।

५०. किसीसे विरोध हो तो मनसे उसकी परिक्रमा करके प्रणाम करो तो उसका विरोध मिटता है, द्वेष-वृत्ति मिटती है। इससे हमारा वैर भी मिटेगा। हमारा वैर मिटनेसे उसका भी वैर मिटेगा।

५१. कोई व्यक्ति हमसे नाराज हो, हमारे प्रति अच्छा भाव न रखता हो तो प्रतिदिन सुबह-शाम मनसे उसकी परिक्रमा करके दण्डवत् प्रणाम करें।

ऐसा करनेसे कुछ ही दिनोंमें उसका भाव बदल जायगा। फिर वह व्यक्ति कभी मिलेगा तो उसके भावोंमें अन्तर दीखेगा। भजन-ध्यान करनेवाले साधकके मानसिक प्रणामका दूसरेपर ज्यादा असर पड़ता है।

५२. किसी व्यक्तिका स्वभाव खराब हो तो जब वह गहरी नींदमें सोया हो, तब उसके श्वासोंके सामने अपना मुख करके धीरेसे कहें कि 'तुम्हारा स्वभाव बड़ा अच्छा है, तुम्हारेमें क्रोध नहीं है' आदि। कुछ दिन ऐसा करनेसे उसका स्वभाव सुधरने लगेगा।

५३. अगर बेटेका स्वभाव ठीक नहीं हो तो उसे अपना बेटा न मानकर, उसमें सर्वथा अपनी ममता छोड़कर उसे सच्चे हृदयसे भगवान्‌के अर्पण कर दे, उसे भगवान्‌का ही मान ले तो उसका स्वभाव सुधर जायगा।

५४. गायकी सेवा करनेसे सब कामनाएँ सिद्ध होती

हैं। गायको सहलानेसे, उसकी पीठ आदिपर हाथ फेरनेसे गाय प्रसन्न होती है। गायके प्रसन्न होनेपर साधारण रोगोंकी तो बात ही क्या है, बड़े-बड़े असाध्य रोग भी मिट जाते हैं। लगभग बारह महीनेतक करके देखना चाहिये।

५५. गायके दूध, घी, गोबर-गोमूत्र आदिमें जीवनी-शक्ति रहती है। गायके घीके दीपकसे शान्ति मिलती है। गायका घी लेनेसे विषैली तथा नशीली वस्तुका असर नष्ट हो जाता है। परन्तु बुद्धि अशुद्ध होनेसे अच्छी चीज भी बुरी लगती है, गायके घीसे भी दुर्गन्ध आती है!

५६. बूढ़ी गायका मूत्र तेज होता है और आँतोंमें घाव कर देता है। परन्तु दूध पीनेवाली बछड़ीका मूत्र सौम्य होता है; अतः वही लेना चाहिये।

५७. गायोंका संकरीकरण नहीं करना चाहिये। यह

सिद्धान्त है कि शुद्ध चीजमें अशुद्ध चीज मिलनेसे अशुद्धकी ही प्रधानता हो जायगी; जैसे—छाने हुए जलमें अनछाने जलकी कुछ बूँदें डालनेसे सब जल अनछाना हो जायगा।

५८. कहीं जाते समय रास्तेमें गाय आ जाय तो उसे अपनी दाहिनी तरफ करके निकलना चाहिये। दाहिनी तरफ करनेसे उसकी परिक्रमा हो जाती है।

५९. रोगी व्यक्तिको भगवान्‌का स्मरण कराना सबसे बड़ी और सच्ची सेवा है। अधिक बीमार व्यक्तिको सांसारिक लाभ-हानिकी बातें नहीं सुनानी चाहिये। छोटे बच्चोंको उसके पास नहीं ले जाना चाहिये; क्योंकि बच्चोंमें स्नेह अधिक होनेसे उसकी वृत्ति उनमें चली जायगी।

६०. रोगी व्यक्ति कुछ भी खा-पी न सके तो गेहूँ आदिको अग्निमें डालकर उसका धुआँ देना चाहिये। उस धुएँसे रोगीको पुष्टि मिलती है।

६१. भगवन्नाम अशुद्ध अवस्थामें भी लेना चाहिये। कारण कि बीमारीमें प्रायः अशुद्धि रहती है। यदि नाम लिये बिना मर गये तो क्या दशा होगी? क्या अशुद्ध अवस्थामें श्वास नहीं लेते? नामजप तो श्वाससे भी अधिक मूल्यवान् है।

६२. मरणासन्न व्यक्तिके सिरहाने गीताजी रखे। दाह-संस्कारके समय उस गीताजीको गंगाजीमें बहा दे, जलाये नहीं।

६३. यदि रोगीके मस्तकपर लगाया चन्दन जल्दी सूख जाय तो समझे कि ये जल्दी मरनेवाला नहीं है। मृत्युके समीप पहुँचे व्यक्तिके मस्तकपर लगा चन्दन जल्दी नहीं सूखता; क्योंकि उसके मस्तककी गरमी चली जाती है, मस्तक ठण्डा हो जाता है।

६४. शवके दाह-संस्कारके समय मृतकके गलेमें पड़ी तुलसीकी माला न निकाले, पर गीताजी हो तो

निकाल देनी चाहिये।

६५. अस्पतालमें मरनेवालेकी प्रायः सद्‌गति नहीं होती। अतः मरणासन्न व्यक्ति यदि अस्पतालमें हो तो उसे घर ले आना चाहिये।

६६. श्राद्ध आदि कर्म भारतीय तिथिके अनुसार करने चाहिये, अँग्रेजी तारीखके अनुसार नहीं। (भारत आजाद हो गया, पर भीतरसे गुलामी नहीं गयी! लोग अँगेजी दिनांक तो जानते हैं, पर तिथि जानते ही नहीं!)

६७. किसी व्यक्तिकी विदेशमें मृत्यु हो जाय तो उसके श्राद्ध आदिमें वहाँकी तिथि न लेकर भारतकी तिथि ही लेनी चाहिये अर्थात् उसकी मृत्युके समय भारतमें जो तिथि हो, उसी तिथिमें श्राद्धादि करना चाहिये।

६८. श्राद्धका अन्न साधुको नहीं देना चाहिये, केवल ब्राह्मणको ही देना चाहिये।

६९. घरमें किसीकी मृत्यु होनेपर सत्संग, मन्दिर और तीर्थ —इन तीनोंमें शोक नहीं रखना चाहिये अर्थात् इन तीनों जगह जरूर जाना चाहिये। इनमें भी सत्संग विशेष है। सत्संगसे शोकका नाश होता है।

७०. किसीकी मृत्युसे दुःख होता है तो इसके दो कारण हैं– उससे सुख लिया है, और उससे आशा रखी है। मृतात्माकी शान्ति और अपना शोक दूर करनेके लिये तीन उपाय करने चाहिये– १) मृतात्माको भगवान्‌के चरणोंमें बैठा देखें २) उसके निमित्त गीता, रामायण, भागवत, विष्णुसहस्रनाम आदिका पाठ करवायें ३) गरीब बालकोंको मिठाई बाँटें।

७१. घरका कोई मृत व्यक्ति बार-बार स्वप्नमें आये तो उसके निमित्त गीता-रामायणका पाठ करें, गरीब बालकोंको मिठाई खिलायें। किसी अच्छे

ब्राह्मणसे गया-श्राद्ध करवायें। उसी मृतात्माकी अधिक याद आती है, जिसका हमपर ऋण है। उससे जितना सुख-आराम लिया है, उससे अधिक सुख-आराम उसे न दिया जाय, तबतक उसका ऋण रहता है। जबतक ऋण रहेगा, तबतक उसकी याद आती रहेगी।

७२. यह नियम है कि दुःखी व्यक्ति ही दूसरेको दुःख देता है। यदि कोई प्रेतात्मा दुःख दे रही है तो समझना चाहिये कि वह बहुत दुःखी है। अतः उसके हितके लिये गया-श्राद्ध करा देना चाहिये।

७३. कन्याएँ प्रतिदिन सुबह-शाम सात-सात बार 'सीता माता' और 'कुन्ती माता' नामोंका उच्चारण करें तो वे पतिव्रता होती हैं।

७४. विवाहसे पहले लड़के-लड़कीका मिलना व्यभिचार है। इसे मैं बड़ा पाप मानता हूँ।

७५. माताएँ-बहनें अशुद्ध अवस्थामें भी रामनाम

लिख सकती हैं, पर पाठ बिना पुस्तकके करना चाहिये। यदि आवश्यक हो तो उन दिनोंके लिये अलग पुस्तक रखनी चाहिये। अशुद्ध अवस्थामें हनुमान्‌चालीसाका स्वयं पाठ न करके पतिसे पाठ कराना चाहिये।

७६. अशुद्ध अवस्थामें माताएँ तुलसीकी मालासे जप न करके काठकी मालासे जप करें, और गंगाजीमें स्नान न करके गंगाजल मँगाकर स्नानघरमें स्नान करें। तुलसीकी कण्ठीतो हर समय गलेमें रखनी चाहिये।

७७. गर्भपात महापाप है। इससे बढ़कर कोई पाप नहीं है। गर्भपात करनेवालेकी अगले जन्ममें कोई सन्तान नहीं होती।

७८. स्त्रियोंको शिवलिंग, शालग्राम और हनुमान्‌जीका स्पर्श कदापि नहीं करना चाहिये। उनकी पूजा भी नहीं करनी चाहिये। वे शिवलिंगकी

पूजा न करके शिवमूर्तिकी पूजा कर सकती हैं। हाँ, जहाँ प्रेमभाव मुख्य होता है, वहाँ विधि-निषेध गौण हो जाता है।

७९. स्त्रियोंको रुद्राक्षकी माला धारण नहीं करनी चाहिये। वे तुलसीकी माला धारण करें।

८०. भगवान्‌की जय बोलने अथवा किसी बातका समर्थन करनेके समय केवल पुरुषोंको ही अपने हाथ ऊँचे करने चाहिये, स्त्रियोंको नहीं।

८१. स्त्रीको गायत्री-जप और जनेऊ -धारण करनेका अधिकार नहीं है। जनेऊके बिना ब्राह्मण भी गायत्री-जप नहीं कर सकता। शरीर मल-मूत्र पैदा करनेकी मशीन है। उसकी महत्ताको लेकर स्त्रियोंको गायत्री-जपका अधिकार देते हैं तो यह अधिकार नहीं, प्रत्युत धिक्कार है! यह कल्याणका रास्ता नहीं है, प्रत्युत केवल अभिमान बढ़ानेके लिये है। कल्याण चाहनेवाली स्त्री गायत्री-जप नहीं

करेगी। स्त्रीके लिये गायत्री-मन्त्रका निषेध करके उसका तिरस्कार नहीं किया है, प्रत्युत उसको आफतसे छुड़ाया है! गायत्री-जपसे ही कल्याण होता हो — यह बात नहीं है। राम-नामका जप गायत्रीसे कम नहीं है। (सबको समान अधिकार प्राप्त हो जाय, सब बराबर हो जायँ — ऐसी बातें कहने-सुननेमें तो बड़ी अच्छी दीखती हैं, पर आचरणमें लाकर देखो तो पता लगे! सब गड़बड़ हो जायगा! मेरी बातें आचरणमें ठीक होती हैं।)

८२. पतिके साधु होनेपर पत्नी विधवा नहीं होती। अतः उसे सुहागके चिह्न नहीं छोड़ने चाहिये।

८३. स्त्री परपुरुषका और पुरुष परस्त्रीका स्पर्श न करे तो उनका तेज बढ़ेगा। पुरुष माँके चरणोंमें मस्तक रखकर प्रणाम करे, पर अन्य सब स्त्रियोंको दूरसे प्रणाम करे। स्त्री पतिके चरण-स्पर्श करे, पर ससुर आदि अन्य पुरुषोंको दूरसे प्रणाम करे।

तात्पर्य है कि स्त्रीको पतिके सिवाय किसीके भी चरण नहीं छूने चाहिये। साधु-सन्तोंको भी दूरसे पृथ्वीपर सिर टेककर प्रणाम करना चाहिये।

८४. दूध पिलानेवाली स्त्रीको पतिका संग नहीं करना चाहिये। ऐसा करनेसे दूध दूषित हो जाता है, जिसे पीनेसे बच्चा बीमार हो जाता है।

८५. कुत्ता अपनी तरफ भौंकता हो तो दोनों हाथोंकी मुट्ठी बन्द कर लें। कुछ देरमें वह चुप हो जायगा।

८६. मुसलमानलोग पेशाबको बहुत ज्यादा अशुद्ध मानते हैं। अतः गोमूत्र पीने अथवा छिड़कनेसे मुस्लिम तन्त्रका प्रभाव कट जाता है।

८७. कहीं स्वर्ण पड़ा हुआ मिल जाय तो उसे कभी उठाना नहीं चाहिये।

८८. पान भी एक शृंगार है। यह निषिद्ध वस्तु नहीं है, पर ब्रह्मचारी, विधवा और संन्यासीके लिये

इसका निषेध है।

८९. पुरुषकी बायीं आँख ऊपरसे फड़के तो शुभ होती है, नीचेसे फड़के तो अशुभ होती है। कानकी तरफवाला आँखका कोना फड़के तो अशुभ होता है और नाककी तरफवाला आँखका कोना फड़के तो शुभ होता है।

९०. यदि ज्वर हो तो छींक नहीं आती। छींक आ जाय तो समझो ज्वर गया! छींक आना बीमारीके जानेका शुभ शकुन है।

९१. शकुन मंगल अथवा अमंगल-'कारक' नहीं होते, प्रत्युत मंगल अथवा अमंगल-'सूचक' होते हैं।

९२. 'पूर्व'की वायुसे रोग बढ़ जाता है। सर्प आदिका विष भी पूर्वकी वायुसे बढ़ता है। 'पश्चिम'की वायु नीरोग करनेवाली होती है।'पश्चिम' वरुणका स्थान होनेसे वारुणीका स्थान

भी है। विद्युत् तरंगें, ज्ञानका प्रवाह 'उत्तर'से आता है। 'दक्षिण'में नरकोंका स्थान है। 'आग्नेय'की वायुसे गीली जमीन जल्दी सूख जाती है; क्योंकि आग्नेयकी वायु शुष्क होती है। शुष्क वायु नीरोगता लाती है। 'नैर्ऋत्य' राक्षसोंका स्थान है। 'ईशान' कालरहित एवं शंकरका स्थान है। शंकरका अर्थ है— कल्याण करनेवाला।

९३. बच्चोंको तथा बड़ोंको भी नजर लग जाती है। नजर किसी-किसीकी ही लगती है, सबकी नहीं। कइयोंकी दृष्टिमें जन्मजात दोष होता है और कई जान-बूझकर भी नजर लगा देते हैं। नजर उतारनेके ये उपाय हैं- *पहला,* साबत लालमिर्च और नमक व्यक्तिके सिरपर घुमाकर अग्निमें जला दें। नजर लगी होगी तो गन्ध नहीं आयेगी। *दूसरा,* दाहिने हाथकी मध्यमा-अनामिका अंगुलियोंको हथेलीकी तरफ मोड़कर तर्जनी व कनिष्ठा अंगुलियोंको

परस्पर मिला लें और बालकके सिरसे पैरतक झाड़ा दें। ये दो अंगुलियाँ सबकी नहीं मिलतीं। *तीसरा,* जिसकी नजर लगी हो, वह उस बालकको थू-थू-थू कर दे, तो भी नजर उतर जाती है।

९४. नया मकान बनाते समय जीवहिंसा होती है; विभिन्न जीव-जन्तुओंकी स्वतन्त्रतामें, उनके आवागमनमें तथा रहनेमें बाधा लगती है, जो बड़ा पाप है। अतः नये मकानकी प्रतिष्ठाका भोजन नहीं करना चाहिये, अन्यथा दोष लगता है।

९५. जहाँतक हो सके, अपना पहना हुआ वस्त्र दूसरेको नहीं देना चाहिये।

९६. देवीकी उपासना करनेवाले पुरुषको कभी स्त्रीपर क्रोध नहीं करना चाहिये।

९७. एक-दूसरेकी विपरीत दिशामें लिखे गये वाक्य अशुभ होते हैं। इन्हें 'जुंझारू वाक्य' कहते हैं।

९८. कमीज, कुरते आदिमें बायाँ भाग (बटन

लगानेका फीता आदि) ऊपर नहीं आना चाहिये। हिन्दू-संस्कृतिके अनुसार वस्त्रका दायाँ भाग ऊपर आना चाहिये।

९९. मंगल भूमिका पुत्र है; अतः मंगलवारको भूमि नहीं खोदनी चाहिये, अन्यथा अनिष्ट होता है। मंगलवारको वस्त्र नापना, सिलना तथा पहनना भी नहीं चाहिये।

१००. नीयतमें गड़बड़ी होनेसे, कामना होनेसे और विधिमें त्रुटि होनेसे मन्त्रोपासकको हानि भी हो सकती है। निष्काम भाव रखनेवालेको कभी कोई हानि नहीं हो सकती।

१०१. हनुमान्चालीसाका पाठ करनेसे प्रेतात्मापर हनुमान्जीकी मार पड़ती है।

१०२. कार्यसिद्धिके लिये अपने उपास्यदेवसे प्रार्थना करना तो ठीक है, पर उनपर दबाव ड़ालना, उन्हें शपथ या दोहाई देकर कार्य करनेके लिये

विवश करना, उनसे हठ करना सर्वथा अनुचित है। उदाहरणार्थ, 'बजरंगबाण'में हनुमान्जीपर ऐसा ही अनुचित दबाव डाला गया है; जैसे- '*इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की।*', '*सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै।*', '*जनकसुता-हरि-दास कहावौ। ता की सपथ, विलंब न लावौ।।*', '*उठ, उठ, चलु, तोहि राम दोहाई*'। इस तरह दबाव डालनेसे उपास्यदेव प्रसन्न नहीं होते, उल्टे नाराज होते हैं, जिसका पता बादमें लगता है। इसलिये मैं 'बजरंगबाण'के पाठके लिये मना किया करता हूँ। 'बजरंगबाण' गोस्वामी तुलसीदासजीकी रचना नहीं है। वे ऐसी रचना कर ही नहीं सकते।

१०३. रामचरितमानस एक प्रासादिक ग्रन्थ है। जिसको केवल वर्णमालाका ज्ञान है, वह भी यदि अँगुली रखकर रामायणके एक-दो पाठ कर ले तो उसको पढ़ना आ जायगा। वह अन्य पुस्तकें भी पढ़ना शुरू कर देगा।